डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

अंधायुग में युधिष्ठिर का चरित्र

कवि धर्मवीर भारती ने अपने गीतिनाट्य 'अंधायुग' में महाभारत की कथा को आधुनिक संदर्भों में चित्रित किया है। यूद्धिष्ठिर पाण्डवों के अग्रज धर्मराज हैं। महाभारत की कथा के अनुसार युद्धिष्ठिर शासन के वास्तविक उत्तराधिकारी थे, परंतु धृतराष्ट्र ने उनको शासन - सूत्र नहीं सौंपा। 'अंधायुग' में सभी चरित्रों को महाभारत से भिन्न रूप में चित्रित किया गया है, उस दृष्टि से युद्धिष्ठिर के चरित्र में अधिक भिन्नता नहीं है। युद्धिष्ठिर का चरित्र लगभग पूर्व रूप में ही अंकित किया गया है। वह स्वभाव से शांत, सत्यवादी और विरक्त रहने वाले व्यक्ति हैं। महाभारत की कथा में उनके द्वारा बोले गए अर्धसत्य 'अश्वत्थामा मारा गया' को अंधायुग में भी ज्यों का त्यों चित्रित किया गया है। युद्धिष्ठिर पूर्णतः सत्यवादी थे, और आजीवन सत्यव्रती रहने का उन्होंने निर्णय भी लिया था परंतु महाभारत के युद्ध के दौरान कृष्ण के द्वारा अत्यधिक दबाव दिए जाने पर उन्हें यह अर्धसत्य बोलना पड़ा था। भीम ने अश्वत्थामा नाम के एक हाथी का वध किया और युद्धिष्ठिर ने द्रोणाचार्य के सामने जोर से कहा कि अश्वत्थामा मारा गया और इसके बाद उनका सारथी रथ को द्रोण से दूर लेकर चला गया इस बीच युद्धिष्ठिर द्वारा बोला गया वाक्य - "नरो वा कुंजरो" वे नहीं सुन सके। इसी अर्धसत्य के कारण द्रोणाचार्य ने अपने अस्त्र रख दिये और मारे गए। अश्वत्थामा युद्धिष्ठिर के इस अर्धसत्य के कारण अत्यंत क्रोधित हो उठता है, उसके इसी अर्धसत्य के कारण उसके पिता कि हत्या हुई थी। उसके मन में प्रतिहिंसा कि ज्वाला भड़क उठती है। युद्धिष्ठिर के इस अर्धसत्यजन्य घृणा को वह कई स्थलों पर स्पष्ट रूप में अभिव्यक्त करता है -

"अर्धसत्य से ही

युद्धिष्ठिर ने उनका

वध कर डाला।

उस दिन से

मेरे अंदर भी

जो शुभ था, कोमलतम था

उसकी भ्रूण हत्या

युद्धिष्ठिर के अर्धसत्य ने कर दी

धर्मराज होकर वे बोले

'नर वा कुंजर'

मानव को पशु से

उन्होंने पृथक नहीं किया।"

इस घटना के बाद युद्धिष्ठिर का अपने आचरण की शुद्धता पर विश्वास नहीं रह गया था। उनकी आत्मा उनसे प्रश्न करती थी। भावी दुश्चिंताओं से सदैव व्यथित रहते थे। -

"थे एक युद्धिष्ठिर

जिनके चिंतित माथे पर

थे लदे हुए भावी विकृत युग के सपने"

उनकी चिंता का प्रमुख बिन्दु था कि आखिर इस युद्ध से मिला क्या? छल - कपट से मिली इस जीत से भी पराजय का ही बोध हो रहा है। -

"ऐसे भयानक महायुद्ध को

अर्धसत्य, रक्तपात, हिंसा से जीतकर

अपने को बिल्कुल हारा हुआ अनुभव करना

यह भी यातना ही है।"

युद्धिष्ठिर व्यथित हैं कि जो राज्य उन्होंने प्राप्त किया है वहाँ अज्ञान और अंधकार का वर्चस्व है। इन आशंकाओं ने उन्हें जीवन से ही विरक्त कर दिया।